हिन्दी Hindi Class 11 Important Question Chapter 15 हस्तक्षेप

1. 'हस्तक्षेप' का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'हस्तक्षेप' का अर्थ हैं दखलअंदाज़ी, रुकावट अर्थात किसी विषय में फेर-बदल करने के लिए कुछ कहना। मगध शासन में कोई हस्तक्षेप नहीं करता है।

2. मगध निवासी हस्तक्षेप से क्यों डरते है?

उत्तर- मगध में रहने वाले लोग हस्तक्षेप से डरते हैं क्यूंकि वे नहीं चाहते की मगध के राजा उनसे गुस्सा होकर उन्हें विद्रोही करार दे जिसका उनको दंड मिले।

3. मगध निवासी के शोषण का क्या कारण था?

उत्तर- मगध की सत्ता क्रूरता से पूर्ण थी। जिसका हर्जाना मगध निवासियों को भोगना पड़ता था। वे बिना विरोध के इस शासन में हो रहे आतंक को चुप्पी के घुट पीते जा रहे थे, यही चुप्पी उनके शोषण का कारण थी।

4. पाठ में कवि ने मगध की स्तिथि के बारे में क्या बताया है?

उत्तर- कवि "श्रीकांत वर्मा" जी बताते है की मगध जो पूरे देश में संपन्न राज्यों में गिना जाता है असल में खोकला है चूँकि वहां रह रहे लोग, सत्ता से दुःख भोग रहे हैं। मगध का शासन क्रूरता एवं एकतंत्र से परिपूर्ण था जहाँ राजा अपनी मनमानी कर जनता को पीड़ा पहुँचाता था।

5. "कोई छींकता तक नहीं" का क्या अर्थ है?

उत्तर- कोई छींकता तक नहीं का अभिप्राय उन लोगो से है जो चुप्पी साधे सब सहन करते हुए सत्ता की मनमानी और आतंकवाद को देख रहे हैं पर कोई प्रतिक्रिया नहीं कर रहे।

6. "मगध है, तो शांति है" पंक्ति का भावार्थ लिखो।

उत्तर- निम्न पंक्ति का भावार्थ है की जब तक मगध एवं मगध की सत्ता के विरोध में कोई स्वर नहीं उठाता बस तब तक ही मगध में शांति है अन्यथा उपद्रव होगा।

7. कविता हस्तक्षेप में कवि मगध के लिए क्या संदर्भित करते हैं?

उत्तर- इस काव्य रचना में निपुणता के साथ कवि ने मगध को आज के समय के शासन से संदर्भित करते हुए बताया है की जिस प्रकार मगध में लोग चुप-चाप सारे अत्याचार, निरंकुशता को सहन करते रहे उसी प्रकार आज भी लोग सत्ता में हो रहे एकतंत्र अथवा दुराचार को देख उसके विरुद्ध कोई आवाज़ नहीं उठा रहे जो की गलत है।

8. "मगध में न रही तो कहाँ रहेगी?" निम्न पंक्ति का क्या अभिप्राय है।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर- निम्न पंक्ति में कवि कहना चाहते हैं की मगध साम्राज्य अपनी बदनामी होने से रोकने के लिए मगधवासियो को डराते-धमकाते हैं, उन्हें दंड अथवा शारीरिक पीड़ा देते है जिससे वे साम्राज्य में हो रहे अन्याय के बारे में अपना मुख न खोले अर्थात आवाज़ न उठाये जिससे शान्ति बानी रही और मगध का झूठा यश भी।

9. "कोई चीखता तक नहीं" का क्या अर्थ है?

उत्तर- इस पंक्ति का अभिप्राय मगधवासियों की चुप्पी से है। मगध साम्राज्य की दहसत के चलते कोई व्यक्ति वहां हो रहे दुर्व्यभार, अन्याय, क्रूरता के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाता था।

10. मुर्दे का हस्तक्षेप क्या प्रश्न खड़ा करता है?

उत्तर- यहाँ मुर्दे का हस्तक्षेप उन लोग की तरफ इशारा करता है जो लोग जीवित होने पर भी अपने हक़ के लिए लड़ने में सक्षम नहीं है हालाँकि मुर्दे जो निर्जीव हैं वे अपने अधिकार में बोल सकते हैं परन्तु उसका क्या मतलब चूँकि उनकी सुनने वाला कोई नहीं इसलिए सजीव व्यक्ति की तुलना मुर्दे से की गयी है अर्थात मगधवासियो को हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिए क्यूंकि आज़ाद होकर मरना, चुप्पी साधे गुलामी करके मरने से अच्छा है।

11. "कोई टोकता तक नहीं" का क्या अर्थ है?

उत्तर- निम्न का अर्थ है की मगधवासी खुद पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठा रहे हैं। ऐसा कोनसा भय है उनके मन में जो आज़ाद होने के सुख को ढक रहा है। क्या कोई भय इतना बड़ा हो सकता है की वह आज़ादी के परो को काट सके? मगधवासी एक स्वर भी शसन के विरुद्ध में नही उठा रहे हैं।

12. कवि ने मगध के प्रजा का डर कैसे व्यक्त किया है?

उत्तर- मगध साम्राज्य में हो रहे निरंकुश, क्रूर, अधिनायकवाद शासन के कारण जनता में चल रहे दुःख एवं अशांति के भाव से कवि बहुत विक्षुब्ध हैं। वे अपने काव्य में इसका जगह-जगह वर्णन करते हैं जैसे कि –

(क) कोई छींकता तक नहीं

(ख) कोई चीख़ता तक नहीं

(ग) कोई टोकता तक नहीं

कवि चाहते हैं की जनता अपने हक़ के लिए, हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाये न कि दुःखी, भयपूर्ण चुप्पी साधे बैठी रहे।

13. कवि के अनुसार समय-समय हस्तक्षेप क्यों जरुरी है?

उत्तर- कवि 'श्रीकांत वर्मा' जी के लिखे गए इस काव्य में वे मगध राज्य के साम्राज्य के बारे में बात करते हैं और बताते हैं की एकतंत्र, तानाशाही शासन-प्रणाली से स्वम् को मुक्त कराने के लिए, जनतंत्र को लाने के लिए समय-समय पर हस्तक्षेप जरुरी है अन्यथा शासन अपनी मनमानी करने लगता है और निवासियों के लिए दुःखदायी परिणाम लाता है। लोगो को सदैव अपने अधिकार के लिए, अपनी आजादी के लिए हस्तक्षेप करते रहना चाहिए इससे संतुलन बना रहता है।

https://www.evidyarthi.in/

14. "एक बार शुरू होने पर

कहीं नहीं रुकता हस्तक्षेप"

उपरोक्त पंक्ति का मूलभाव स्पष्ट करो।

उत्तर- कवि उपरोक्त पंक्तियों से सभी को सन्देश देना चाहते हैं की सहने, झेलने की एक क्षमता होती है और जब हालात हद से ज्यादा बिगड़ने लगते है तब आक्रोश जागता है। मगध में हो रहे अत्याचार से परेशान, दुखी मगधवासी भय के कारणवश कोई पहल नहीं कर रहे हैं परन्तु जब पानी सर के ऊपर से निकल जायेगा तब हर एक व्यक्ति अपनी आज़ादी, अधिकार, आदर के लिए दृढ़ता से खड़ा होगा और अपने स्वर को बुलंदी से रखेगा। यह हस्तक्षेप की अग्नि जब एक बार जलने लगेगी तब इसे भुझा पाना आशम्भव होगा। हमारा देश भी तब तक गुलामी की बेड़ियों में बंधा रहा जब तक हमारा स्वाभिमान नहीं जागा था परन्तु एक बार आक्रोश जागते ही हमे आज़ादी और अंग्रेज़ों को भागते समय नहीं लगा था।

15. जब कोई नहीं करता..... मनुष्य क्यों मरता है?

उपरोक्त पंक्ति का मूलभाव स्पष्ट करो।

उत्तर- मगध साम्राज्य में लोगों पर हो रहे अन्याय, दुर्व्यभार के कारण जनता भयभीत है। वे जानते है की आज़ादी को पाने के लिए उन्हें विद्रोह करना होगा, हस्तक्षेप करना होगा परन्तु जब वह ऐसा नहीं करते तो वे एक मुर्दे के सामान हो जाते हैं जो चाहता तो है आज़ाद होना परन्तु उसके लिए कुछ कर नहीं सकता। कवि कहते हैं की जब कोई व्यक्ति नहीं बोलता तब एक मुर्दा आकर बोलता है की परन्तु उसके बोलने का कोई सार नहीं क्यूंकि उसे सुनने वाला कोई नहीं। कवि की लिखी इस पंक्ति में दूसरा भाव भी दीखता है जिसमे वे समाज के दबे-कुचले लोगो मुर्दे के सामान रख आगे बढ़ने तथा हस्तक्षेप प्रेरित करते हैं की जब आपदा आती है आती है तो हर वर्ग के लोग सचेत हो, दृढ़ता से विरुद्ध करते हैं।

16. मनुष्य क्यों मरते हैं? प्रस्तुत पंक्ति का मूलभाव लिखो।

उत्तर- प्रस्तुत सवाल पंक्ति में मुर्दे के द्वारा किया गया है अथवा मुर्दे का तात्पर्य उन सजीव लोगो के जीवन से है जो जीवित होते हुए भी स्वं पर हो रहे अन्याय को रोक नई पा रहे हैं। मगध के क्रूर राजा और शासन-प्रणाली ने लोगों को इतना भयभीत कर दिया है की वे आवाज़ उठाने से कतराते हैं क्यूंकि वे दंड के भागी नहीं बनना चाहते है परंतु यहाँ पर मुर्दा कहता है की ऐसे जीवन का क्या उपयोग जो गुलामी एवं डर से नियंत्रित हो। ऐसे व्यक्ति जो आज़ादी की छाँव को गुलामी की धुप में जला देते हैं वह मृत्यु के भागीदार होते है अर्थात जो लोग अपने अधिकार के स्वतः प्रयास नहीं करते, हार मान लेते हैं उनकी मृत्यु निश्चित है।

https://www.evidyarthi.in/